INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

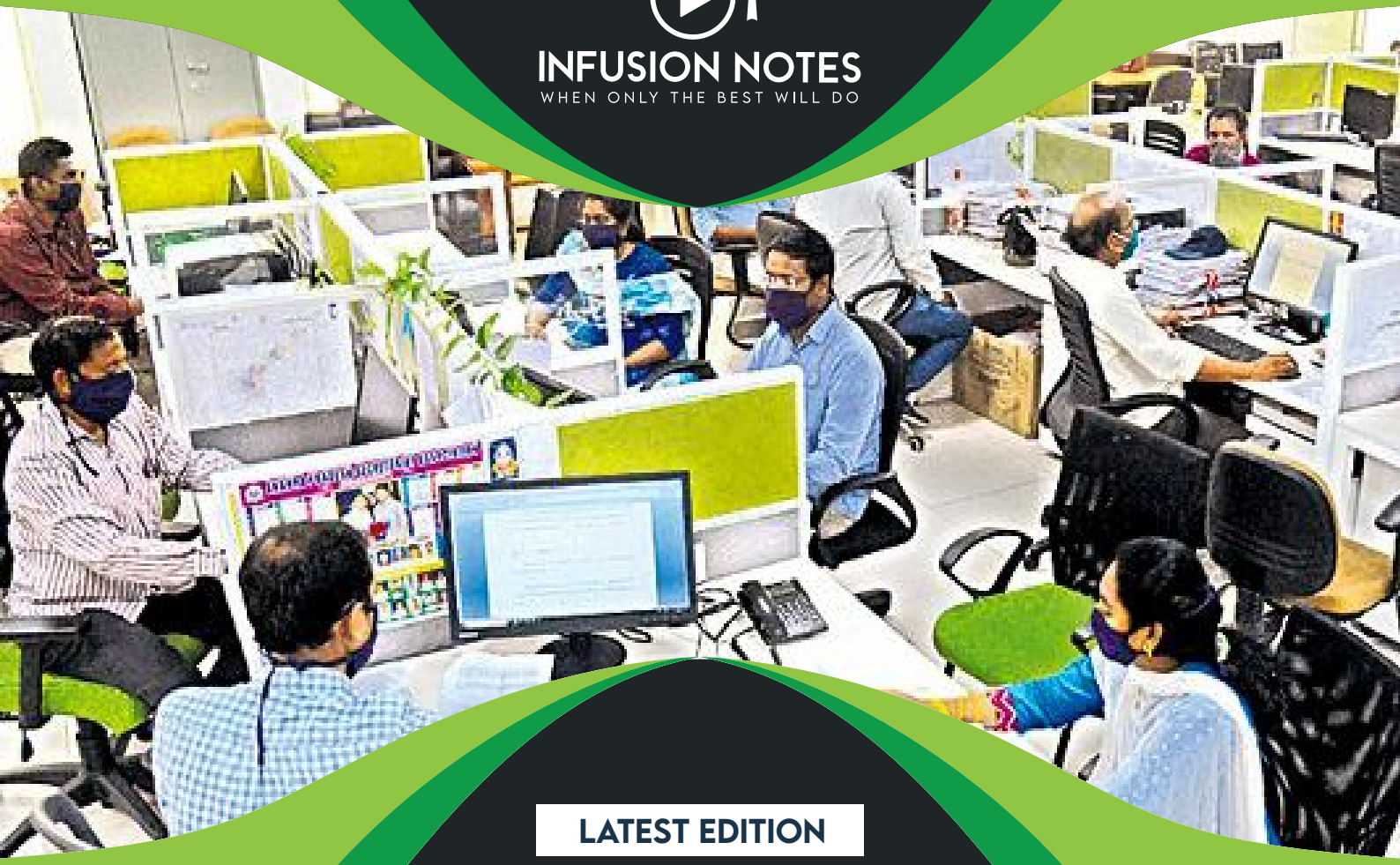

LATEST EDITION

RSMSSB LDC

लिपिक ग्रेड - II, एवं कनिष्ठ सहायक

HANDWRITTEN NOTES

[भाग -4] इतिहास + संस्कृति (राजस्थान)

INFUSION NOTES

WHEN ONLY THE BEST WILL DO

RSMSSB

LDC

लिपिक ग्रेड – II,
एवं कनिष्ठ सहायक

भाग – 4

इतिहास + कला एवं संस्कृति

प्रस्तावना

*प्रिय पाठकों, प्रस्तुत नोट्स "**RSMSSB LDC (लिपिक ग्रेड – II, कनिष्ठ सहायक)** को एक विभिन्न अपने अपने विषयों में निपुण अध्यापकों एवं सहकर्मियों की टीम के द्वारा तैयार किया गया है / ये नोट्स पाठकों को **राजस्थान कर्मचारी चयन बोर्ड, जयपुर (RSMSSB)** द्वारा आयोजित करायी जाने वाली परीक्षा **"LDC (लिपिक ग्रेड – II, कनिष्ठ सहायक)"** भर्ती परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगें /*

अंततः सतर्क प्रयासों के बावजूद नोट्स में कुछ कमियों तथा त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती है / अतः आप सूचि पाठकों का सुझाव सादर आमंत्रित हैं/

प्रकाशकः

INFUSION NOTES

जयपुर, 302017 (RAJASTHAN)

मो : 01414045784, 8233195718

ईमेल : contact@infusionnotes.com

वेबसाइट : http://www.infusionnotes.com

Whatsapp Link – https://wa.link/kxkr5q

Online Order Link – https://bit.ly/rajasthan-ldc-notes

मूल्य : ₹

संस्करण : नवीनतम (2022)

राजस्थान का इतिहास

1. प्राचीन राजस्थान 1

- प्रमुख स्रोत (अभिलेख, सिक्के साहित्य इत्यादि)
- राजस्थान की प्राचीन सभ्यताएं

2. मध्यकालीन इतिहास 17

- गुर्जर प्रतिहार वंश
- मेवाड़ का इतिहास
- मेवाड़ –मारवाड़ सम्बन्ध
- राठौड़ वंश एवं मारवाड़ वंश
- कच्छवाहा वंश
- बीकानेर के वंशज
- राजस्थान के प्रमुख वंश
- राजस्थान में मुग़ल सम्राट

3. राजस्थान की रियासतें और ब्रिटिश संधियां 76

4. राजस्थान में 1857 की क्रांति 80

5. राजस्थान में राजनैतिक चेतना 86

6. किसान एवं जनजाति आंदोलन 92

7. प्रजामंडल आंदोलन 104

8. राजस्थान का एकीकरण 109

9. राजस्थान के प्रमुख व्यक्तित्व 114

कला संस्कृति

1. साहित्य एवं बोलियाँ	126
2. लोकगीत एवं लोक नृत्य	134
3. राजस्थान के लोक देवता एवं लोक देवियाँ	142
4. राजस्थान के किले, महल एवं हवेलियाँ	150
5. राजस्थान के प्रमुख मंदिर	162
6. राज्य की चित्रकला	164
7. राजस्थान की हस्तकला	171
8. राजस्थान के प्रमुख मेले	173
9. राजस्थान के प्रमुख त्यौहार	179
10. राजस्थानी वेशभूषा एवं आभूषण	185
11. सामाजिक रीत रिवाज एवं प्रथाएँ	187
12. राजस्थान के प्रमुख संत एवं सम्प्रदाय	199
13. प्रमुख पर्यटन केंद्र	207

राजस्थान का इतिहास

अध्याय – I
प्राचीन राजस्थान

- **प्रमुख स्रोत**

अशोक के अभिलेख :-

- मौर्य सम्राट अशोक के दो अभिलेख भाब्रू अभिलेख तथा बैराठ अभिलेख बैराठ की पहाड़ी से मिले हैं।
- भाब्रू अभिलेख से अशोक के बौद्ध धर्म के अनुयायी होने तथा राजस्थान में मौर्य शासन होने की जानकारी मिलती है।

बड़ली का अभिलेख :-

- यह राजस्थान का सबसे प्राचीनतम अभिलेख है। 443 ई. पूर्व का यह अभिलेख अजमेर के बड़ली गाँव के भिलोत माता मंदिर से पं. गौरीशंकर हीराचन्द ओझा को प्राप्त हुआ।

बसंतगढ़ अभिलेख (625 ई.):-

- राजा वर्मलात के समय का यह अभिलेख बसंतगढ़ सिरोही से प्राप्त हुआ है।
- इससे अर्बुदांचल के राजा राज्जिल तथा उसके पुत्र सत्यदेव के बारे में जानकारी मिलती है।
- इस अभिलेख में सामन्त प्रथा का उल्लेख मिलता है।

मानमोरी का अभिलेख :-

- 713 ई. का यह अभिलेख मानसरोवर झील (चित्तौड़गढ़) के तट पर उत्कीर्ण है।
- इस अभिलेख से चित्तौड़गढ़ दुर्ग का निर्माण करने वाले चित्रांग (चित्रांगद) के बारे में जानकारी मिलती है।
- यह अभिलेख कर्नल जेम्स टॉड द्वारा इंग्लैण्ड ले जाते समय समुद्र में फेंक दिया गया था।

मण्डोर अभिलेख :-

- जोधपुर के मंडोर में स्थित 837 ई. के इस अभिलेख में गुर्जर-प्रतिहार शासकों की वंशावली तथा शिव पूजा का उल्लेख किया गया है। इस अभिलेख की रचना गुर्जर-प्रतिहार शासक बाउक द्वारा करवाई गई थी।

बड़वा अभिलेख :-

- यह बड़वा (कोटा) में स्तम्भ पर उत्कीर्ण मौखरी वंश के शासकों का सबसे प्राचीन अभिलेख है।

कणसवा का अभिलेख :-

- 738 ई. का यह अभिलेख कोटा के निकट कणसवा गाँव में उत्कीर्ण है जिसमें मौर्य वंश के राजा धवल का उल्लेख मिलता है।

आदिवराह मंदिर का अभिलेख :-

- 944 ई. का यह लेख उदयपुर के आदिवराह मंदिर से प्राप्त हुआ है जो संस्कृत में ब्राह्मी लिपि में उत्कीर्ण है।

अचलेश्वर का अभिलेख (1285 ई.) :-

- यह अभिलेख संस्कृत भाषा में अचलेश्वर मंदिर के पास दीवार पर उत्कीर्ण है
- इस अभिलेख में बापा से महाराणा समरसिंह तक की वंशावली का उल्लेख है।

किराडू का लेख :-

- 1161 ई. का यह लेख किराडू के शिव मंदिर में उत्कीर्ण है जिसकी भाषा संस्कृत है।
- इस लेख में परमारों की उत्पत्ति ऋषि वशिष्ठ के आबू यज्ञ से बतायी गई है।
- इस प्रशस्ति में किराडू की परमार शाखा का वंशक्रम दिया गया है।

सांडेराव का लेख :-

- 1164 ई. का यह लेख देसूरी के पास सांडेराव के महावीर जैन मंदिर में उत्कीर्ण है।
- यह लेख कल्हणदेव के समय का है जिसमें उसके परिवार द्वारा मंदिर के लिए दिये गए दान का उल्लेख मिलता है।

शृंगी ऋषि का लेख :-

- 1428 ई. का यह लेख मेवाड़ के एकलिंगजी के पास शृंगी ऋषि नामक स्थान पर काले पत्थर पर उत्कीर्ण है, जिसकी भाषा संस्कृत है।

- इनके समय में भारत को स्वतंत्रता मिली और भारत या पाक मिलने की स्वतंत्रता भोपाल के नवाब और जोधपुर के महाराज हनुवंत सिंह पाक में मिलना चाहते थे और मेवाड़ को भी उसमें मिलाना चाहते थे। इस पर उन्होनें कहा कि मेवाड़ भारत के साथ था और अब भी वहीं रहेगा। यह कह कर वे इतिहास में अमर हो गये। स्वतंत्र भारत के वृहद राजस्थान संघ के भूपाल सिंह प्रमुख बनाये गये। महाराणा भोपाल सिंह जी ने भोपलसागर बसाया और वहां एक विशाल तालाब का निर्माण भी करवाया।

महाराणा भगवत सिंह (1955 – 1984 ई.)
महाराणा महेन्द्र सिंह (1984 ई.)

- इस तरह 556 ई. में जिस गुहिल वंश की स्थापना हुई बाद में वहीं सिसोदिया वंश के नाम से जाना गया। जिसमें कई प्रतापी राजा हुए, जिन्होंने इस वंश की मानमर्यादा, ईज्जत और सम्मान को न केवल बढ़ाया बल्कि इतिहास के गौरवशाली अध्याय में अपना नाम जोड़ा आज राजस्थान का इतिहास इन्हीं वीरो की शहादत का पर्याय बन गया है।

राठौड़ वंश एवं मारवाड़ वंश

राठौड़ वंश

मारवाड़ (जोधपुर) के राठौड़ संस्थापक – राव सीहा (1240 – 1273)

- राव सीहा जी राजस्थान में स्वतंत्र राठौड़ राज्य के संस्थापक थे। राव सीहा जी के वीर वंशज अपने शौर्य, वीरता एवं पराक्रम व तलवार के धनी रहे हैं। मारवाड़ में राव सीहा जी द्वारा राठौड़ साम्राज्य का विस्तार करने में उनके वंशजो में राव धुहड़ जी, राजपाल जी, जालन सिंह जी, राव छाड़ा जी, राव तीड़ा जी, खीम करण जी, राव वीरम दे, राव चूँड़ा जी, राव रिदमल जी, राव जोधा, राव बीका, बीदा, दूदा, कानध्ल, मालदेव का विशेष क्रमबद्ध योगदान रहा है। इनके वंशजों में दुर्गादास व अमर सिंह जैसे इतिहास प्रसिद्ध व्यक्ति हुए। राव सिहा सेतराम जी के आठ पुत्रों में सबसे बड़े थे।

चेतराम सम्राट के, पुत्र अस्ट महावीर !
जिसमें सिहों जेस्ठ सूत, महारथी रणधीर।

- राव सीहा जी सं. 1268 के लगभग पुष्कर की तीर्थ यात्रा के समय मारवाड़ आये थे उस मारवाड़ की जनता मीणों, मेरों आदि की लूटपाट से पीड़ित थी, राव सिहा के आगमन की सूचना पर पाली नगर के पालीवाल ब्राह्मण अपने मुखिया जसोधर के साथ सीहा जी मिलकर पाली नगर को लूटपाट व अत्याचारों से मुक्त करने की प्रार्थना की। अपनी तीर्थ यात्रा से लौटने के बाद राव सीहा जी ने भाइयों व फलौदी के जगमाल की सहायता से पाली में हो रहे अत्याचारों पर काबू पा लिया एवं वहां शांति व शासन व्यवस्था कायम की, जिससे पाली नगर की व्यापारिक उन्नति होने लगी।

आठों में सीहा बड़ा, देव गरुड़ हैं साथ।
बनकर छोडिया कन्नोज में, पाली मारा हाथ।
पाली के अलावा भीनमाल के शासक के अत्याचारों की जनता की शिकायत पर जनता को अत्याचारों से मुक्त कराया।
भीनमाल लिधी भडे,सिहे साल बजाय।
दत दीन्हो सत सग्रहियो, ओजस कठे न जाय।

- पाली व भीनमाल में राठौड़ राज्य स्थापित करने के बाद सीहा जी ने खेड़ पर आक्रमण कर विजय कर लिया।
- इसी दौरान शाही सेना ने अचानक पाली पर हमला कर लूटपाट शुरू करदी, हमले की सूचना मिलते ही सीहा जी पाली से 18 किलोमीटर दूर बिठू गावं में शाही सेना के खिलाफ आ डटे, और मुस्लिम सेना को खधेड़ दिया । वि. सं. 1330 कार्तिक कृष्ण द्वादशी सोमवार को करीब 80 वर्ष की उम्र में सीहा जी का स्वर्गवास हुआ व उनकी सोलंकी रानी पार्वती इनके साथ सती हुई ।
- सीहा जी की रानी (पाटन के शासक जय सिंह सोलंकी की पुत्री) से बड़े पुत्र आसनाथ जी हुए जो पिता के बाद मारवाड़ के शासक बने । राव सिहं जी राजस्थान में राठौड़ राज्य की नींव डालने वाले पहले व्यक्ति थे ।

महत्वपूर्ण तथ्य -

- मारवाड़ के राठौड़ वंश का संस्थापक / राठौड़ वंश का आदि पुरुष कहा जाता है।
- राव सीहा पुरस्कार मारवाड़ फाउण्डेशन द्वारा दिया जाता है। 2012-13 का राव सीहा पुरस्कार विजयदान देथा को तथा 2013-14 का राव सीहा पुरस्कार डॉ. दलबीर भण्डारी को दिया गया है।
- विजयदान देथा इन्हें बिज्जी नाम से जाना जाता है। इनका जन्म बोरंदा, जोधपुर में हुआ। इन्हें राजस्थान का शेक्सपीयर कहा जाता है।
- बातां री फुलवारी (14 खण्ड), अलेखूं हिटलर, बापू के तीन हत्यारे, दुविधा उपन्यास (इस पर पहेली फिल्म बनी) लिखा। 2012-13 का राव सीहा पुरस्कार इन्हें दिया गया तथा राजस्थान का सर्वोच्च असैनिक सम्मान राजस्थान रत्न से भी इन्हें नवाजा गया है।
- दलबीर भण्डारी जोधपुर में जन्में डॉ. दलबीर भण्डारी वर्तमान में अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय हेग, नीदरलैण्ड में न्यायाधीश के पद पर कार्यरत हैं ।
- मारवाड़ के राठौड़ वंश के संस्थापक, तथा मारवाड़ के राठौड़ों का संस्थापक या आदि पुरुष भी कहा जाता है ।
- राव सीहां कुंवर 'सेतराम' का पुत्र था उसकी रानी सोलंकी वंश की 'पार्वती थी ।
- 13 वीं शताब्दी में जब तुर्कों ने कन्नौज को आक्रमण कर बर्बाद कर दिया तो राव सीहा मारवाड़ चला आया ।
- राव सीहा ने सर्वप्रथम पाली (वर्तमान) के निकट अपना साम्राज्य स्थापित किया ऐसा कहते हैं, कि उन्होंने पाली के पालीवाल ब्राह्मणों को मेर व मीणाओं के अत्याचार से मुक्ति दिलाई उनकी रक्षा की तथा उसके पश्चात् उनके आग्रह पर वहीं आकर बस गया ।
- पाली के समीप बीठू गाँव के देवल के लेख से सीहा की मृत्यु की तिथि 1273 ई. निश्चित होती है । इस लेख के अनुसार सीहा सेत कुँवर का पुत्र था । उसकी पत्नी पार्वती ने उसकी मृत्यु पर इस देवल का निर्माण करवाया था । इस लेख के अनुसार सीहा की मृत्यु बीठू गाँव (पाली) में मुसलमानों से गायों कि रक्षा करते हुए युद्ध के दौरान हुई थी । इस लेख पर अश्वारोही सीहा को शत्रु पर भाला मारते हुए दिखाया गया है । इस लेख से प्रमाणित होता है कि इस समय राठौड़ों का राज्य विस्तार पाली के आसपास ही सीमित था ।
- राव सीहा के पश्चात् उनका पुत्र आसनाथ गद्दी पर बैठा ।

आसनाथ (1273 – 1291 ई.)

- सीहा के बाद आसनाथ राठौड़ों का शासक बना। उसने गूँदोच को केन्द्र बनाया। 1291 ई. में सुल्तान जलालुद्दीन खिलजी के आक्रमण के समय पाली की रक्षा करते हुए आसनाथ 1291 ई. में वीरगति को प्राप्त हुआ ।
- आसनाथ के पुत्र धूहड़ ने राठौड़ों की कुलदेवी चक्रेश्वरी नागणेचीद्ध की मूर्ति कर्नाटक से लाकर नगाणा गांव (बाड़मेर) मे स्थापित कराई ।
- इनके छोटे भाई का नाम धांधलश् था। ये लोक देवता पाबू जी के पिता थे।

राव चूँडा (1383 – 1423)

- राव चूँडा विरमदेव का पुत्र था ।
- राव चूँडा राठौड़ों का प्रथम महत्वपूर्ण शासक माना जाता है । अपने पिता की मृत्यु के समय चूँडा छः वर्ष का था । इसलिए उसकी माता ने उसे चाचा मल्लिनाथ के पास भेज दिया। मल्लिनाथ ने चूँडा को सालोड़ी गाँव जागीर में दी थी ।

नोट – प्रिय पाठकों ,यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए नीचे दिए गये **हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें** , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी **"RSMSSB LDC (लिपिक ग्रेड – II, कनिष्ठ सहायक)"** की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे, धन्यवाद /

संपर्क करें – 8233195718, 8504091672, 9694804063, 9887809083

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से अन्य परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम –

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्न
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 (cut off- 64)
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)
SSC GD 2021	30 नवम्बर	66 (100 में से)
SSC GD 2021	01 दिसम्बर	65 (100 में से)
SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
राजस्थान S.I. 2021	13 सितम्बर	113 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	79 (150 में से)

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	103 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	95 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (1st शिफ्ट)	56 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 (160 में से)

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

& Many More Exams

दोस्तों, इनका proof देखने के लिए नीचे दी गयी लिंक पर क्लिक करें या हमारे youtube चैनल पर देखें –

RAS PRE. – https://www.youtube.com/watch?v=p3_i-3qfDy8&t=136s

VDO PRE. – https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856W18&t=202s

Patwari – https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=103s

अन्य परीक्षाओं में भी इसी तरह प्रश्न आये हैं Proof देखने के लिए हमारे youtube चैनल (Infusion Notes) पर इसकी वीडियो देखें या हमारे नंबरों पर कॉल करें।

संपर्क करें- 8233195718, 9694804063, 8504091672, 9887809083

ONLINE ORDER के लिए OFFICIAL WEBSITE	Website- https://bit.ly/rajasthan-ldc-notes
PHONE NUMBER	+918233195718 +918504091672 9694804063 01414045784,
TELEGRAM CHANNEL	https://t.me/infusion_notes
FACEBOOK PAGE	https://www.facebook.com/infusion.notes
WHATSAPP करें	https://wa.link/kxkr5q

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

• 'कच्छवाहा' वंश

- कच्छवाहा' अपने आपको भगवान श्री राम के पुत्र कुश' की संतान मानते हैं।
- संस्थापक दुलहराय (तेजकरण), मूलतः ग्वालियर निवासी था। 1137 ई. में उसने बड़गुर्जरों को हराकर नवीन ढूँढाड़ राज्य की स्थापना की।
- दुलहराय के वंशज कोकिलदेव ने 1207 ई. में मीणाओं से आमेर जीतकर अपनी राजधानी बनाया, जो 1727 ई. तक कच्छवाहा वंश की राजधानी रहा।
- इसी वंश के शेखा ने शेखावटी में अपना अलग राज्य बनाया।

कछवाहा वंश के प्रमुख शासक

पृथ्वीसिंह

- यह आमेर का पहला शक्तिशाली शासक था। 1527 में खानवा के युद्ध में पृथ्वीराज राणा साँगा की तरफ से लड़ता हुआ वीरगति को प्राप्त होता है, इस समय पृथ्वीराज की पत्नी बालाबाई अपने छोटे पुत्र पूरणमल का राज्याभिषेक करवाती है, जिसके कारण पृथ्वीराज का बड़ा पुत्र भीमसिंह नाराज हो जाता है।
- भीमदेव 1533 में पूरणमल को परास्त करके स्वयं शासक बनता है, 1536 में भीमदेव की मृत्यु के पश्चात उसका पुत्र रतन सिंह शासक बनता है, रतन सिंह से उसका चाचा साँगा शत्रुता रखने लग जाता है, साँगा ने बीकानेर के राव जैतसी के साथ मिलकर रतन सिंह से उसका मोजमाबाद वाला क्षेत्र छीनकर साँगानेर बसाता है, साँगा की मृत्यु के पश्चात उसका छोटा भाई भारमल रतन सिंह से शत्रुता रखने लग जाता है। भारमल ने रतन सिंह के छोटे भाई आसकरण को अपने पक्ष में मिलाते हुए आसकरण के माध्यम से रतन सिंह की हत्या करवा देता है और आसकरण को कुछ समय के लिए शासक बनाता है भारमल जून 1547 में आसकरण को हटाते हुए स्वयं शासक बन जाता है।
- रानी बालाबाई ने गलता में कृष्णदास पयहारी संप्रदाय को संरक्षण दिया था।

भारमल (1547-1574 ई.)

- भारमल (1547-1574 ई.) या बिहारीमल 1547 ई. में भारमल आमेर का शासक बना।
- भारमल प्रथम राजस्थानी शासक था, जिसने अकबर की अधीनता स्वीकार की व 1562 ई. में अपनी पुत्री हरखाबाई उर्फ मानमति या शाही बाई (मरियम उज्जमानी) का विवाह अकबर से किया।
- मुग़ल बादशाह जहाँगीर हरखाबाई का ही पुत्र था।

अकबर और राजस्थान यात्रा :-

- अकबर ने अपने जीवन में पहली बार यात्रा के लिए 1562 में राजस्थान आता है यहीं उसकी राजस्थान की पहली यात्रा थी इस यात्रा का उद्देश्य अजमेर स्थित ख्वाजा साहब की दरगाह में जियारत करना था।
- इस यात्रा के दौरान आमेर का शासक भारमल सांभर के निकट अकबर से सामेला प्रक्रिया से मुलाकात करते हुए अकबर की अधीनता स्वीकार करता है, तथा अपनी पुत्री के विवाह का प्रस्ताव रखता है।

जोधा अकबर विवाह :-

- अजमेर से लौटता हुआ अकबर 10 जनवरी 1562 को भारमल की पुत्री जोधाबाई / हरकाबाई के साथ विवाह करता है।
- जोधा अकबर विवाह पहला राजपूत मुग़ल विवाह सम्बन्ध था।
- भारमल पहला राजपूत था जिसने मुगलों की अधीनता स्वीकार की थी।
- अकबर ने भारमल को अमीर-उल-उमरा की उपाधि प्रदान की थी तथा उसके पुत्र भगवन्तदास व पौत्र मानसिंह को अपनी दरबारी सेवा में नियुक्त किया।

भगवन्त दास (1574-1589 ई.)

- भगवन्त दास या भगवान दास भारमल का पुत्र था।
- उसने अपनी पुत्री मानबाई (मनभावनी) का विवाह शहजादे सलीम (जहाँगीर) से किया।

- मानबाई को सुल्तान निस्सा' की उपाधि प्राप्त थी। खुसरो इसी का पुत्र था।
- 1562 में जब भारमल अकबर की अधीनता स्वीकार करता है, तो अकबर भगवन्त दास को अपनी दरबारी सेवा में नियुक्त करता है।
- भगवन्त दास मुगलों के दरबार में नियुक्त होने वाला पहला राजपूत दरबारी था।
- अकबर ने भगवन्त दास को 1582 में लाहौर का सूबेदार नियुक्त किया था। इसी लाहौर सूबेदारी के तहत 1589 में भगवन्त दास ने अपनी पुत्री मानबाई का विवाह अकबर के पुत्र सलीम के साथ करवाया था।
- मानबाई को मुग़ल दरबार में सुल्ताना मस्ताना' के नाम से जाना जाता था। खुसरो इसी का पुत्र था, जहाँगीर के अत्यधिक शराबी होने के कारण मानबाई ने 1608 ई. में आत्महत्या कर ली थी।

मानबाई का शाही मकबरा इलाहाबाद में स्थित है।

मानसिंह (1589-1614 ई.)

- मानसिंह भगवन्त दास का पुत्र था।
- मानसिंह आमेर के कच्छवाहा शासकों में सर्वाधिक प्रतापी एवं महान् राजा था।
- मानसिंह ने 52 वर्ष तक मुगलों की सेवा की।
- मानसिंह 1573 में अकबर के दूत के रूप में राणा प्रताप से मिला था।
- 1576 ई. में हल्दीघाटी युद्ध में उसने शाही सेना का नेतृत्व किया था।
- अकबर ने उसे फर्जन्द (पुत्र) एवं राजा की उपाधि प्रदान की।
- वह अकबर के नवरत्नों में शामिल था।
- मानसिंह ने बंगाल में अकबर नगर तथा बिहार में मानपुर नगर को बसाया।
- मानसिंह स्वयं कवि, विद्वान, साहित्य प्रेमी व विद्वानों का आश्रयदाता था।
- शिलादेवी (आमेर), जगत शिरोमणी (आमेर) गोविन्द देवजी (वृंदावन) मंदिर उसी ने बनवाये थे।

बिहार सूबेदारी:

- अकबर मानसिंह को 1587 ई. में बिहार का सूबेदार नियुक्त करता है। बिहार सूबेदारी के दौरान 1589 में भगवन्तदास की मृत्यु होने पर मानसिंह का राज्याभिषेक होता है, इस समय अकबर मानसिंह की मनसब 5000 निश्चित करता है । बिहार सूबेदारी के दौरान ही मानसिंह ने 1594 में उड़ीसा को जीतकर उसे मुग़ल भारत का अंग बनाया था।

बंगाल सूबेदारी:

- 1594 ई. में मानसिंह बंगाल का सूबेदार नियुक्त होता है। बंगाल सूबेदारी के दौरान बीमार होने पर मानसिंह अजमेर आकर बंगाल पर नियंत्रण हेतु अपने पुत्र जगतसिंह को बंगाल भेजता है।
- मानसिंह ने आमेर में जल आपूर्ति हेतु मानसागर झील का निर्माण करवाया था तथा आमेर के महलों व आमेर के मुकुट बिहारी मंदिर का निर्माण करवाया था।
- मानसिंह ने जयगढ़ दुर्ग और गोविंददेव जी के मंदिर की नींव रखवाई थी।
- मानसिंह ने पुष्कर में मान महल और वृंदावन में दो कृष्ण मंदिरों का निर्माण करवाया था।
- मानसिंह ने बिहार में मानपुर और बंगाल में अकबरनगर नामक शहर बसाए थे।

जयसिंह प्रथम या मिर्जा राजा जयसिंह (1621-1667)

- इसने तीन मुग़ल बादशाहों जहाँगीर, शाहजहाँ व औरंगजेब को अपनी सेवाएँ दी।।
- उसने औरंगजेब की तरफ से शिवाजी को संधि के लिए बाध्य किया।
- यह संधि इतिहास में पुरन्दर की संधि (जून 1665 ई.) के नाम से प्रसिद्ध है। उसकी योग्यता एवं सेवाओं से प्रसन्न होकर शाहजहाँ ने उसे मिर्जा राजा की उपाधि प्रदान की।
- बिहारी सतसई के रचयिता कवि बिहारी उसके दरबारी कवि थे।
- बिहारी का भांजा कुलपति मिश्र भी बड़ा विद्वान था, जिसने 52 ग्रन्थों की रचना की इनका दरबारी था ।
- इनकी मृत्यु बुरहानपुर के पास हुई थी।
- प्रमुख दरबारी: (i) बिहारी कवि - बिहारी सतसई - यह रचना पढ़कर ही जयसिंह पुनः आमेर आता है, इसमें कुल 713 दोहे हैं। जयसिंह ने बिहारी

महाराजा रामसिंह द्वितीय (1835-1880 ई.)

- महाराजा रामसिंह को नाबालिग होने के कारण ब्रिटिश सरकार ने अपने संरक्षण में ले लिया। इनके समय मेजर जॉन लुडलो ने जनवरी, 1843 ई. में जयपुर का प्रशासन संभाला सरकार ने इसे अपने संरक्षण में ले लिया।
- इनके समय मेजर जॉन लुडलो ने जनवरी, 1843 ई. में जयपुर का प्रशासन संभाला तथा उन्होंने सतीप्रथा, दास प्रथा एवं कन्या वध, दहेज प्रथा आदि पर रोक लगाने के आदेश जारी किये। महाराजा रामसिंह को वयस्क होने के बाद शासन के समस्त अधिकार दिये गये।
- 1857 ई. के स्वतंत्रता आंदोलन में महाराजा रामसिंह ने अंग्रेजों की भरपूर सहायता की।
- अंगेजी सरकार ने इन्हें सितार-ए-हिन्द की उपाधि प्रदान की।
- 1870 ई. में गवर्नर जनरल एवं वायसराय लॉर्ड मेयो ने जयपुर एवं अजमेर की यात्रा की ।
- दिसम्बर, 1875 ई. में गवर्नर जनरल नार्थब्रुक तथा फरवरी, 1876 ई. प्रिंस ऑफ वेल्स अल्बर्ट ने जयपुर की यात्रा की।
- उनकी यात्रा की स्मृति में जयपुर में अल्बर्ट हॉल (म्यूजियम) का शिलान्यास प्रिंस अल्बर्ट के हाथों करवाया गया तथा 1876 में जयपुर को गुलाबी रंग से रंगवाया गया ।
- इनके समय सन् 1844 में जयपुर में महाराजा कॉलेज तथा संस्कृत कॉलेज का निर्माण हुआ। महाराजा रामसिंह के काल में जयपुर की काफी तरक्की हुई।
- 1880 ई. में इनका निधन हो गया

सवाई माधोसिंह द्वितीय (1880-1922 ई.)

- सवाई रामसिंह द्वितीय के देहांत के पश्चात माधोसिंह द्वितीय जयपुर के शासक बने।
- 1902 ई. में माधोसिंह II ब्रिटिश सम्राट एडवर्ड सप्तम के राज्याभिषेक में शामिल होने इंग्लैंड गये तब वे अपने साथ गंगा जल से भरे हुए चाँदी के दो विशाल जार लेकर गये थे।
- ये जार विश्व के सबसे बड़े जार हैं जो गिनीज़ बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में दर्ज हैं।
- इन्होंने मदनमोहन मालवीय का जयपुर में भव्य स्वागत किया तथा बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना के लिए 5 लाख रुपये दिये।
- माधोसिंह द्वितीय ने जयपुर के सिटी पैलेस में मुबारक महल का निर्माण करवाया जो इस्लामिक तथा ईसाई शैली में निर्मित है।
- इन्होंने नाहरगढ़ दुर्ग में अपनी नौ पासवानों के लिए नौ सुन्दर महलों का निर्माण करवाया।
- माधोसिंह II ने वृंदावन में माधव बिहारी जी के मंदिर का निर्माण करवाया।
- माधोसिंह II के कोई पुत्र न होने पर इन्होंने ईसरदा के ठाकुर सवाईसिंह के पुत्र मोरमुकुट सिंह को गोद लेकर अपना उत्तराधिकारी घोषित किया।

सवाई मानसिंह द्वितीय (1922-1949 ई.)

- महाराजा माधोसिंह II के पश्चात मोरमुकुट सिंह 1922 में सवाई मानसिंह II के नाम से जयपुर के शासक बने।
- इन्होंने अपने प्रधानमंत्री मिर्जा इस्माईल की सहायता से जयपुर को आधुनिक रूप दिया तथा अपने नाम से हॉस्पिटल, मेडिकल कॉलेज, स्कूल तथा स्टेडियम आदि बनवाये।
- ये पोलो के एक अच्छे खिलाड़ी थे जिससे इन्होंने विश्वभर में प्रसिद्धि प्राप्त की।
- इनकी एक रानी कूच बिहार के शासक की पुत्री गायत्री देवी थी जिसके लिए इन्होंने मोती डूंगरी पर तख्त-ए-शाही महलों का निर्माण करवाया।
- मानसिंह II ने जयपुर में सिटी पैलेस म्यूजियम की स्थापना की।
- 30 मार्च, 1949 को इन्हें वृहत राजस्थान का प्रथम राजप्रमुख बनाया गया तथा ये 1 नवम्बर 1956 तक इस पद रहे ।
- वर्ष 1960 में ये राज्यसभा के सदस्य निर्वाचित हुए तथा 1965 में इन्हें स्पेन में भारत का राजदूत नियुक्त किया गया ।

अर्जुनपाल

- 1327 ई. में अर्जुनपाल ने तिमनगढ़ दुर्ग को मुस्लिमों से छीनकर यहाँ पर पुनः यादवों का शासन स्थापित किया ।
- अर्जुनपाल ने 1348 ई. में लीसिल नदी के तट पर कल्याणपुर कस्बा बसाया ।
- कल्याणपुर कस्बा वर्त्तमान में करौली के नाम से जाना जाता है ।
- अर्जुनपाल ने ही यहाँ हनुमानजी की माता (अंजनी माता का मंदिर) बनवाया ।

हरबक्षपल

- हरबक्षपाल ने 15 नवम्बर 1817 ई. में ईस्ट इंडिया कंपनी के साथ संधि कर अंग्रेजों की अधीनता स्वीकार कर ली ।
- करौली राजस्थान की पहली रियासत थी जिसने ईस्ट इंडिया कंपनी के साथ अधीनस्थ संधि की ।

• राजस्थान में मुग़ल सम्राट

बाबर :-

बाबर की राजपूतों के प्रति कोई सुनियोजित नीति नहीं थी। उसे मेवाड़ के राणा साँगा और चंदेरी के मेदिनी राय के खिलाफ लड़ना पड़ा क्योंकि भारत में अपने साम्राज्य की स्थापना और सुरक्षा के लिए यह आवश्यक था। दोनों अवसरों पर, उन्होंने अपनी सफलता के बाद जिहाद की घोषणा की और राजपूतों के सिर की मीनारों को उठाया। लेकिन उन्होंने एक राजपूत राजकुमारी के साथ हुमायूँ से शादी की और राजपूतों को सेना में नियुक्त किया । इस प्रकार उन्होंने न तो राजपूतों से दोस्ती करने की कोशिश की और न ही उन्हें अपना स्थायी दुश्मन माना।

हुमायूँ :-

हुमायूँ ने राजपूतों के बारे में अपने पिता की नीति को जारी रखा। हालाँकि, उसने मेवाड़ के राजपूतों से दोस्ती करने का एक अच्छा अवसर खो दिया। उन्होंने मेवाड़ को गुजरात के बहादुर शाह के खिलाफ भी मदद नहीं की, जब मेवाड़ की रानी कर्मावती ने उनकी बहन बनने की पेशकश की थी । वह शेरशाह के खिलाफ मारवाड़ के मालदेव का समर्थन पाने में भी असफल रहा।

शेरशाह :-

शेरशाह अपनी राजसत्ता के अधीन राजपूत शासकों को लाना चाहता था। 1545 ई. में उसने मारवाड़ पर हमला किया और उसके बड़े हिस्से पर कब्जा करने में सफल रहा। रणथम्भौर पर भी उसका कब्जा हो गया, जबकि मेवाड़ और जयपुर के शासकों ने बिना लड़े ही उसकी अधीनता स्वीकार कर ली।

उसने अपनी मृत्यु से ठीक पहले कालिंजर पर भी कब्जा कर लिया। इस प्रकार, वह अपने उद्देश्य में सफल रहा । उनकी सफलता का एक प्राथमिक कारण यह था कि उन्होंने राजपूत शासकों के राज्य को गिराने की कोशिश नहीं की । जिन्होंने उसकी अधीनता स्वीकार की, वे अपने राज्यों के स्वामी रह गए ।

अकबर :-

- अकबर पहला मुग़ल सम्राट था, जिसने राजपूतों के प्रति एक सुनियोजित नीति अपनाई । उनकी राजपूत नीति के निर्माण में विभिन्न कारकों ने भाग लिया । अकबर एक साम्राज्यवादी था । वह अपने शासन को यथासंभव भारत के क्षेत्र में लाना चाहता था।
- इसलिए राजपूत शासकों को उसकी अधीनता में लाना आवश्यक था। अकबर राजपूतों की शिष्टता, आस्था, मर्यादा, युद्ध कौशल आदि से प्रभावित था । उसने उन्हें अपने दुश्मन के रूप में बदलने के बजाय उनसे दोस्ती करना पसंद किया।
- अकबर ने राजपूतों से दोस्ती करने की कोशिश की, लेकिन साथ ही उन्हें अपनी अधीनता में लाने की इच्छा भी की।
- हम राजपूत शासकों के बारे में निम्नलिखित तीन सिद्धांत पाते हैं:

(क) उसने राजपूतों के मजबूत किलों पर कब्जा कर लिया जैसे कि चित्तौड़, मेड़ता, रणथम्भौर, कालिंजर आदि के किले । इसने राजपूतों की शक्ति को कमजोर कर दिया ताकि वे प्रतिरोध की पेशकश कर सकें।

(ख) उन राजपूत शासकों ने या तो अपनी संप्रभुता स्वीकार कर ली या उनके साथ वैवाहिक संबंधों में प्रवेश किया जो स्वेच्छा से अपने राज्यों के स्वामी थे। उन्हें राज्य में उच्च पद दिए गए थे, और उनके प्रशासन में कोई हस्तक्षेप नहीं था। हालाँकि, उन्हें सम्राट को वार्षिक कर देने के लिए कहा गया था।

(c) जिन राजपूत शासकों ने उनका विरोध किया, उन पर हमला किया गया और उनकी संप्रभुता को स्वीकार करने के लिए उनको मजबूर करने के प्रयास किए गए। मेवाड़ का मामला इसका सबसे अच्छा उदाहरण था।

- 1562 ई. में मेड़ता के किले पर कब्जा कर लिया गया था, जो जयमल के अधीन था, जो मेवाड़ के शासक के सामंती प्रमुख थे। 1568 ई. में, चित्तौड़ को मेवाड़ से छीन लिया गया और 1569 ई. में राजा सुरजन राय को रणथम्भौर के किले को आत्मसमर्पण करने के लिए मजबूर होना पड़ा। उसी वर्ष, राजा रामचंद्र ने स्वेच्छा से कालिंजर के किले को अकबर को सौंप दिया।
- उन शासकों में जिन्होंने अकबर की संप्रभुता को स्वेच्छा से स्वीकार किया था, आमेर (जयपुर) के राजा भारमल थे। वह 1562 ई. में अकबर से मिला, उसने उसकी संप्रभुता स्वीकार कर ली और अपनी बेटी की शादी उससे कर दी। इसी राजकुमारी ने सलीम को जन्म दिया। अकबर ने राजा भारमल, उनके बेटे, भगवान दास और उनके पोते मानसिंह को उच्च मानस पुरस्कार दिया ।
- चित्तौड़ के किले के पत्तन के बाद बीकानेर और जैसलमेर जैसे कुछ राजपूत राज्यों ने स्वेच्छा से अकबर की अधीनता स्वीकार कर ली, जबकि उनमें से कुछ ने उसके साथ वैवाहिक गठबंधन में प्रवेश किया। हल्दीघाटी की लड़ाई के बाद कुछ और राजपूत शासकों जैसे बाँसवाड़ा, बूँदी और ओरछा ने भी अकबर की अधीनता स्वीकार कर ली। इस प्रकार, अधिकांश राजपूत शासकों ने बिना किसी लड़ाई के अकबर को अपना राज्य सौंप दिया, उनकी सेवा में प्रवेश किया, उनके वफादार सहयोगी बने और उनमें से कुछ उनके रिश्तेदार भी बने ।
- एकमात्र राज्य जिसने अधीनता स्वीकार करने से इन्कार कर दिया था वह मेवाड़ था। मेवाड़ का शासक परिवार, सिसोदिया राजस्थान के राजपूत शासकों में सबसे सम्मानित परिवार था। मेवाड़ के तत्कालीन शासक उदय सिंह थे। मेवाड़ को राजनैतिक और आर्थिक दोनों दृष्टियों से जीतना आवश्यक था। राणा उदयसिंह ने मालवा के भगोड़े शासक, बाज बहादुर और विद्रोही- मिर्जा को आश्रय दिया था।
- राणा ने अकबर की संप्रभुता को स्वीकार करने से इन्कार कर दिया था और उन राजपूत शासकों को देखा था जिन्होंने अकबर के साथ वैवाहिक गठबंधन में प्रवेश किया था। मेवाड़ की विजय के बिना अकबर उत्तरी भारत की अपनी विजय को पूरा नहीं कर सकता था। इसके अलावा, मेवाड़ की अधीनता अन्य राजपूत शासकों को प्रस्तुत करने के लिए प्रेरित करने के लिए आवश्यक थी। मेवाड़ की विजय आर्थिक दृष्टिकोण से भी उपयोगी थी।

नोट – प्रिय पाठकों ,यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए नीचे दिए गये **हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें** , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी **"RSMSSB LDC (लिपिक ग्रेड – II, कनिष्ठ सहायक)"** की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे, धन्यवाद /

संपर्क करें – 8233195718, 8504091672, 9694804063, 9887809083

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से अन्य परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम –

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्न
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 (cut off- 64)
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)
SSC GD 2021	30 नवम्बर	66 (100 में से)
SSC GD 2021	01 दिसम्बर	65 (100 में से)
SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
राजस्थान S.I. 2021	13 सितम्बर	113 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	79 (150 में से)

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	103 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	95 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (1st शिफ्ट)	56 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 (160 में से)

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

& Many More Exams

दोस्तों, इनका proof देखने के लिए नीचे दी गयी लिंक पर क्लिक करें या हमारे youtube चैनल पर देखें –

RAS PRE. – https://www.youtube.com/watch?v=p3_i-3qfDy8&t=136s

VDO PRE. – https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856W18&t=202s

Patwari – https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=103s

अन्य परीक्षाओं में भी इसी तरह प्रश्न आये हैं Proof देखने के लिए हमारे youtube चैनल (Infusion Notes) पर इसकी वीडियो देखें या हमारे नंबरों पर कॉल करें।

संपर्क करें- 8233195718, 9694804063, 8504091672, 9887809083

ONLINE ORDER के लिए OFFICIAL WEBSITE	Website- https://bit.ly/rajasthan-ldc-notes
PHONE NUMBER	+918233195718 +918504091672 9694804063 01414045784,
TELEGRAM CHANNEL	https://t.me/infusion_notes
FACEBOOK PAGE	https://www.facebook.com/infusion.notes
WHATSAPP करें	https://wa.link/kxkr5q

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

अध्याय – 4

राजस्थान में 1857 की क्रांति

1857 के विद्रोह के संदर्भ में विभिन्न मत -

- डॉ. रामविलास शर्मा- यह स्वतंत्रता संग्राम था।
- डॉ. रामविलास शर्मा– यह जनक्रांति थी।
- डिजरायली बेंजामिन डिजरैली – यह राष्ट्रीय विद्रोह था।
- वी. डी. सावरकर- यह स्वतंत्रता की पहली लड़ाई थी (पुस्तक द इंडियन वॉर ऑफ इंडिपेंडेंस)।
- एस.एन. सेन- यह विद्रोह राष्ट्रीयता के अभाव में स्वतंत्रता संग्राम था।
- सर जॉन लॉरेंस, के. मैलेसन, ट्रैविलियन, सीले- 1857 की क्रांति एक सिपाही विद्रोह था (इस विचार से भारतीय समकालीन लेखक मुंशी जीवनलाल दुर्गादास बंदोपाध्याय सैयद अहमद खाँ भी सहमत है।)
- जवाहरलाल नेहरु - यह विद्रोह मुख्यतः सामन्तशाही विद्रोह था।
- सर जेम्स आउट्रम और डब्लयू टेलर ने इसको - यह विद्रोह हिंदू-मुस्लिम का परिणाम था कहा है।
- क्रांति के प्रमुख कारण (Reason of 1857 Revolution)
- देशी रियासतों के राजा मराठा व पिण्डारियों से छुटकारा पाना चाहते थे।
- लॉर्ड डलहौजी की राज्य विलय की नीतियाँ।
- चर्बी लगे कारतुस का प्रयोग (एनफील्ड)।
- 1857 के विद्रोह का प्रारंभ 29 मार्च 1857 को बैरकपुर छावनी (पश्चिम बंगाल) की 34वीं नेटिव इन्फेंट्री के सिपाही मंगल पांडे के विद्रोह के साथ हुआ किन्तु संगठित क्रांति 10 मई 1857 को मेरठ (उत्तर प्रदेश) छावनी से प्रारंभ हुई थी।
- 1857 की क्रांति का तत्कालीन कारण चर्बी वाले कारतूस माने जाते हैं, जिनका प्रयोग एनफील्ड राइफल में किया जाता था। इस रायफल के बारे में भारतीय सैनिकों में अफवाह फैली की इनमें लगने वाले कारतूसों में गाय तथा सूअर की चर्बी लगी होती है।
- कारतूस का प्रयोग करने से पूर्व उसके खोल को मुंह से उतरना पड़ता था जिससे हिंदू तथा मुस्लिमों का धर्म भ्रष्ट होता है। परिणाम स्वरूप 1857 का विद्रोह प्रारंभ हुआ।
- 1857 की क्रांति के समय राजपूताना उत्तरी पश्चिमी सीमांत प्रांत के प्रशासनिक नियंत्रण में था जिसका मुख्यालय आगरा में था इस प्रांत का लेफ्टिनेंट गवर्नर कोलविन था।
- अजमेर- मेरवाड़ा का प्रशासन कर्नल डिक्सन के हाथों में था क्रांति के समय राजपुताना का ए.जी.जी जॉर्ज पैट्रिक लॉरेंस था जिस का मुख्यालय माउंट आबू में स्थित था अजमेर राजपूताना की प्रशासनिक राजधानी था और अजमेर में ही अंग्रेजों का खजाना और शस्त्रागार स्थित था।
- अजमेर की रक्षा की जिम्मेदारी 15वीं नेटिव इन्फैंट्री बटालियन के स्थान पर ब्यावर से बुलाई गई, लेफ्टिनेंट कारनेल के नेतृत्व वाली रेजिमेंट को दे दी गई मेरठ विद्रोह की खबर 19 मई 1857 को माउंट आबू पहुंची।

इस क्रांति का प्रतीक चिह्न रोटी और कमल का फूल था

राजस्थान में क्रांति के समय पॉलिटिकल एजेंट

1. कोटा रियासत में - मेजर बर्टन
2. जोधपुर रियासत में - मेक मैसन
3. भरतपुर रियासत में - मोरिशन
4. जयपुर रियासत में – कर्नल ईडन
5. उदयपुर रियासत में - शावर्स और
6. सिरोही रियासत में - जे.डी.हॉल थे

राजस्थान में क्रांति के समय राजपूत शासक (Rajasthan Rajput ruler in revolution)–

- कोटा रियासत में - रामसिंह
- जोधपुर रियासत में - तख्तसिंह
- भरतपुर रियासत में - जसवंत सिंह
- उदयपुर रियासत में - स्वरूप सिंह
- जयपुर रियासत में - रामसिंह द्वितीय
- सिरोही रियासत में - शिव सिंह
- धौलपुर रियासत में - भगवंत सिंह
- बीकानेर रियासत में - सरदार सिंह

अध्याय – 5

राजस्थान में राजनैतिक चेतना

- **राजस्थान में राजनैतिक चेतना** – 1857 ई. में कंपनी की सत्ता के विरुद्ध भारतव्यापी क्रांति का शंखनाद हुआ। भारतव्यापी इस क्रांति से राजस्थान की वीर प्रसूता भूमि कैसे अछूती रह सकती थी? अतः 1857 ई. में राजस्थान में भी इस क्रांति का विस्फोट हुआ, जिसे आधुनिक इतिहासकारों ने प्रथम स्वाधीनता संग्राम की संज्ञा दी है।
- राजस्थान में यह क्रांति इतिहास की एक युगांतकारी घटना प्रमाणित हुई। यद्यपि राजस्थानी राज्यों में ब्रिटिश अधिकारियों के अनाधिकार हस्तक्षेप के कारण राजस्थानी नरेशों में भी अंग्रेजों के प्रति रोष था, लेकिन राजस्थानी नरेशों को ब्रिटिश सरकार द्वारा सुरक्षा का आश्वासन मिल जाने के कारण, वे ब्रिटिश सत्ता के प्रति निष्ठावान बने रहे तथा क्रांति का दमन करने में वे अंग्रेजों से सहयोग करते रहे। इस प्रकार राजस्थानी नरेश इस क्रांति की आँधी को रोकने के लिये बलवर्द्धक प्रमाणित हुए।
- ब्रिटिश सैन्य शक्ति तथा राजस्थानी नरेशों के अपूर्व सहयोग से, इस क्रांति को पूरी तरह कुचल दिया गया था, तथापि ब्रिटिश सत्ता के विरुद्ध आक्रोश तथा ब्रिटिश आधिपत्य का अंत कर देश को स्वतंत्र कराने की जनभावना को नहीं कुचला जा सका था। वस्तुतः यह क्रांति स्वाधीनता सेनानियों के लिये प्रेरणा-स्रोत साबित हुई और इस क्रांति ने भावी राष्ट्रीय आंदोलन का मार्ग प्रशस्त कर दिया।
- निर्भीक धर्म-प्रचारकों एवं उग्र राष्ट्रवादी विचारों वाले नेताओं ने ब्रिटिश आधिपत्य से मुक्त होने की भावना की उस मंद चिन्गारी को बुझने नहीं दिया, बल्कि वे लोगों में ब्रिटिश विरोधी भावना का प्रचार कर उनमें राजनैतिक चेतना जागृत करते रहे।
- भारत के कुछ बुद्धजीवियों ने ब्रिटिश भारत के लोगों को नागरिक अधिकार दिलाने व भारतीयों को प्रशासन से संबद्ध करने हेतु 1885 ई. में अखिल भारतीय कांग्रेस की स्थापना की, जिससे राष्ट्रीय स्वाधीनता संग्राम का एक नया अध्याय आरंभ हुआ।

अखिल भारतीय कांग्रेस की गतिविधियों का प्रभाव देशी रियासतों पर भी पड़ा और धीरे-धीरे देशी रियासतों में भी स्वाधीनता प्राप्ति की भावना फैलने लगी।

- इस प्रकार 19 वीं शताब्दी के अंत में तथा 20 वीं शताब्दी के प्रारंभ में नवयुवकों ने 1857 ई. की बुझी हुई मशाल (क्रांति) को पुनः प्रज्वलित किया, जिसका अंतिम परिणाम देश की स्वाधीनता के रूप में प्रकट हुआ।
- 19 वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध व 20 वीं शताब्दी के दो दशकों के बीच राजस्थान में कुछ ऐसी घटनाएँ घटित हुई, जिससे राजस्थान में राजनैतिक जागृति फैल गई, जिसके फलस्वरूप 20 वीं शताब्दी के तीसरे और चौथे दशक में राजस्थान भी राष्ट्रीय आंदोलन की मुख्य धारा से जुड़ः गया।

राजनैतिक जागृति के लिये उत्तरदायी कारण

राजस्थान की देशी रियासतों का राजनैतिक ढाँचा उस समय अनुकूल नहीं था। 1857 ई. की क्रांति के बाद राजस्थान के राजनीतिक क्षितिज पर ब्रिटिश साम्राज्य रूपी सूर्य अपनी प्रखर किरणों के साथ देदीप्यमान होने लगा।

राजस्थान में पराधीनता और राजनैतिक विवशता का घना कुहरा सर्वत्र छाया हुआ था। फिर भी, कुछ भारतीय नेताओं की यह मान्यता थी कि भारतीय रियासतों में स्थिति ब्रिटिश प्रान्तों की अपेक्षा अच्छी थी। उनकी इस मान्यता का कोई आधार नहीं था, क्योंकि वस्तुस्थिति उनकी मान्यता से बिल्कुल विपरीत थी।

रियासती जनता दोहरी गुलामी में जीवन यापन कर रही थी। एक ओर तो शासकों का निरंकुश शासन था तो दूसरी तरफ रियासतों पर ब्रिटिश सत्ता का नियंत्रण। ऐसी परिस्थितियों में भारतीय रियासतों में स्थिति ब्रिटिश प्रान्तों की अपेक्षा कैसे अच्छी हो सकती थी, क्योंकि ब्रिटिश प्रान्तों में तो केवल अंग्रेजों का निरंकुश शासन था।

भारतीय नेताओं की यह मान्यता तो तब धूमिल हुई, जब राजस्थान में किसान आंदोलन उठ खड़े हुए। 19 वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध तक तो संपूर्ण राजस्थान में अनात्मविश्वास की गहरी बर्फ पडी हुई थी। किन्तु राजस्थान के कुछ नवयुवकों ने अखिल भारतीय

कला संस्कृति

अध्याय – I
साहित्य एवं बोलियाँ

भारतीय साहित्य में राजस्थानी भाषा के साहित्य की एक अलग पहचान है। राजस्थान में साहित्य संस्कृत तथा प्राकृत भाषा में लिखा ज्ञान पड़ता है। पूर्व मध्ययुग (700-1000 ई.) में अपभ्रंश भाषा के विकास के कारण इसमें भी साहित्य लिखा गया।

राजस्थान के मूर्धन्य कवि एवं साहित्यकार

जैन साहित्य:- जैन धर्मावलम्बियों यथा- जैन आचार्यो, मुनियों, यतियों, एवं श्रावकों तथा जैन धर्म से प्रभावित साहित्यकारों द्वारा वृहद् मात्रा में रचा गया साहित्य जैन साहित्य कहलाता है। यह साहित्य विभिन्न प्राचीन मंदिरों के ग्रन्थागारों में विपुल मात्रा में संग्रहित है। यह साहित्य धार्मिक साहित्य है जो गद्य एवं पद्य दोनों में उपलब्ध है।

चारण साहित्य:- राजस्थान के चारण आदि विरुद्ध गायक कवियों द्वारा रचित अन्याय कृतियों को सम्मिलित रूप से चारण साहित्य कहते हैं। चारण साहित्य मुख्यतः पद्य में रचा गया है। इसमें वीर रसात्मक कृतियों का बाहुल्य है।

ब्राह्मण साहित्य:- राजस्थानी साहित्य में ब्राह्मण साहित्य अपेक्षाकृत कम मात्रा में उपलब्ध है कान्हड़दे प्रबन्ध, हम्मीरायण, बीसलदेव रासौ, रणमल छंद आदि प्रमुख गन्थ इस श्रेणी के ग्रंथ है।

संत साहित्य:- मध्यकाल में भक्ति आंदोलन की धारा में राजस्थान की शांत एवं सौम्य जलवायु में इस भू-भाग पर अनेक निर्गुणी एवं सगुणी संत-महात्माओं का आविर्भाव हुआ। इन उदारमना संतों ने ईश्वर भक्ति में एवं जन-सामान्य के कल्याणार्थ विपुल साहित्य की रचना यहाँ की लोक भाषा में की है। संत साहित्य अधिकांशत पद्यमय ही है।

लौक साहित्य:- राजस्थानी साहित्य में सामान्य जन द्वारा प्रचलित लोक शैली में रचे गये साहित्य की भी अपार थापी विद्यमान है। यह साहित्य लोक गाथाओं, लोकनाट्यों कहावतों, पहेलियों एवं लोक गीतों के रूप में विद्यमान है।

राजस्थानिक साहित्य गद्य एवं पद्य दोनों में रचा गया है। इसका लेखन मुख्यतः निम्न विधाओं में किया गया है-

1) ख्यात:- राजस्थानी साहित्य के इतिहासपरक ग्रंथ, जनकी रचना तत्कालीन शासकों ने अपनी मान मर्यादा एवं वंशावली के चित्रण हेतु करवाई 'ख्यात' कहलाते हैं। मुहणोत नैणसी री ख्यात, दयालदास री ख्यात, बीकानेर रां राठौड़ा री ख्यात आदि प्रसिद्ध हैं।

2) वंशावली:- इस श्रेणी की रचनाओं में राजवंशों की वंशावलियां विस्तृत विवरण सहित लिखी गई हैं। जैसे- राठौड़ा री वंशावली, राजपुता री वंशावली आदि।

3) वात:- वात का अर्थ एतिहासिक, पौराणिक, प्रेमपरक व काल्पनिक कथा या कहानी से है।

4) प्रकास:- किसी वंश अथवा व्यक्ति विशेष की उपलब्धियों या घटना विशेष पर प्रकाश डालने वाली कृतियाँ 'प्रकास' कहलाती है। राजप्रकास, पाबू प्रकास, उदय प्रकास आदि इनके मुख्य उदाहरण है।

5):- वचनिका शब्द संस्कृत के वचन शब्द से बना है।यह गद्य पद्य मिश्रित काव्य विधा के रूप में राजस्थानी साहित्य में प्रचलित हुआ है। राजस्थानी साहित्य में अचलदास खींची री वचनिका एवं राठौड़ रतनसिंह जी महेस दासौत री वचनिका प्रमुख है। वचनिका मुख्यतः अपभ्रंश मिश्रित राजस्थानी में लिखी हुई है।

6) मरस्या:- राजा या किसी व्यक्ति विशेष की मृत्योपरांत शोक व्यक्त करने के लिए रचित काव्य, जिसमें उसके व्यक्ति के चारित्रिक गुणों के अलावा अन्य क्रिया-कलापों का वर्णन किया जाता है।

7) दवावैत:- दवावैत कलात्मक गद्य का एक अन्य रूप है जो वचनिका काव्य रूप की तरह ही है। यह उर्दू और फारसी की शब्दावली से युक्त राजस्थानी कलात्मक लेखन शैली है, किसी व्यक्ति विशेष की प्रशंसा दोहों के रूप में की जाती है।

8) रासौ:- राजाओं की प्रशंसा में लिखे गए काव्य ग्रंथ जिनमें उनके युद्ध अभियानों व वीरतापुर्ण कृत्यों के विवरण के साथ उनके राजवंश का विवरण भी मिलता है। बीसलदेव रासौ, पृथ्वीराज रासौ आदि मुख्य रासौ ग्रंथ है।

9) वेलि:- राजस्थानी वेलि साहित्य में शासकों एवं सामन्तों की वीरता, इतिहास, विद्वता, प्रेम-भावना, स्वामिभक्ति, वंशावली आदि घटनाओं का उल्लेख होता है। पृथ्वीराज राठौड़ लिखित 'वेलि किसन रुकमणिरी' वेलि ग्रंथ प्रसिद्ध है।

10) विगत:- यह भी इतिहास परक ग्रंथ लेखन की शैली है। 'मारवाड़ रा परगना री विगत इस शैली की प्रमुख रचना है।

साहित्य में प्रथम:-

1) राजस्थान की प्राचीनतम रचना:- भरतेश्वर बाहूबलिघोर (लेखक: वज्रसेन सूरि - 1168 ई. के लगभग),
भाषा - मारू गुर्जन,
विवरण - भारत और बाहूबलि के बीच हुए युद्ध का वर्णन।

2) संवतोल्लेख वाली प्रथम राजस्थानी रचना:- भारत बाहूबलि रास (1184 ई,) में शालिभद्र सूरि द्वारा रचित ग्रंथ भारू गुर्जर भाषा में रचित रास परम्परा में सर्वप्रथम और सर्वाधिक पाठ वाला खण्ड काव्य।

3) वचनिका शैली की प्रथम सशक्त रचना:- अचलदास खींची री वचनिका (शिवदास गाडण)

4) राजस्थानी भाषा का सबसे पहला उपन्यास:- कनक सुन्दर है। इस उपन्यास की रचना 1903 ई. में शिवचंद्र भरतिया द्वारा की गई थी। शिवचंद्र भरतिया को राजस्थान का भारतेंदु हरिश्चंद्र कहा जाता है।

5) राजस्थानी का प्रथम नाटक:- केसर विलास के लेखक शिवचन्द्र भरतिया थे।

6) राजस्थानी में प्रथम कहानी:- विश्रांत प्रवास (1904- शिवचन्द्र भरतिया) (इस प्रकार शिवचन्द्र भरतिया राजस्थानी उपन्यास नाटक और कहानी के प्रथम लेखक माने जाते है।)

7) स्वातंत्र्योत्तर काल का प्रथम राजस्थानी उपन्यास:- आभैपटकी (1956- श्रीलाल नथमल जोशी)।

8) आधुनिक राजस्थान की प्रथम काव्यकृति:- बादली (चन्द्रसिंह बिरकाली)। यह स्वतंत्र प्रकृति की प्रथम महत्त्वपुर्ण कृति है।

राजस्थानी साहित्य की प्रमुख रचनाएः-

1) ग्रंथ एवं लेखक पृथ्वीराज रासौ (कवि चन्द्र बरदाई):- इसमें अजमेर के अन्तिम चौहान सम्राट- पृथ्वीराज चौहान तृतीय के जीवन चरित्र एवं युद्धों का वर्णन किया गया है। यह पिंगल में रचित वीर रस का महाकाव्य है। माना जाता है कि चन्द बरदाई पृथ्वीराज चौहान का दरबारी कवि एवं मित्र था।

2) **खुमाण रासौ** (दलपत विजय:- पिंगल भाषा के इस ग्रंथ में मेवाड़ के बप्पा रावल से लेकर महाराजा राजसिंह तक के मेवाड़ शासकों का वर्णन है।

3) विरुद छतहरी, किरतार बावनौ (कवि दुरसा आढ़ा):- विरुद छतहरी महाराणा प्रताप की शौर्य गाथा है और किरतार बावनौ में उस समय की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति को बतलाया गया है दुरसा आढ़ा अकबर के दरबारी कवि थे। इनकी पीतल की बनी मूर्ति अचलगढ़ के अचलेश्वर मंदिर में विद्यमान है।

4) बीकानेर रां राठौड़ा री ख्यात (दयालदास सिंढायच):- दो खंडो के ग्रंथ में जोधपुर एवं बीकानेर के राठौड़ों के प्रारंभ से लेकर बीकानेर के महाराजा सरदार सिंह के राज्यभिषेक तक की घटनाओं का वर्णन है।

5) सगत रासौ (गिरधर आसिया) मनु प्रकाशन:- इस डिंगल ग्रंथ में महाराणा प्रताप के छोटे भाई शक्तिसिंह का वर्णन है। यह 943 छंदों का प्रबंध काव्य है। कुछ पुस्तकों में इसका नाम सगतसिंह रासौ भी मिलता है।

6) हम्मीर रासौ (जोधराज):- इस काव्य ग्रंथ में रणथम्भौर शासक राणा चौहान की वंशावली व

- **लोक देवियाँ**

करणी माता

- करणी माता चारणों की कुलदेवी एवं बीकानेर के राठौड़ों की इष्ट देवी है
- 'चूहों वाली देवी' के नाम से विख्यात है।
- जन्म सुआप गाँव (जोधपुर) के चारण परिवार में हुआ था।
- मंदिर - देशनोक (बीकानेर)।

करणी जी के काबे

- करणी माता के मंदिर में पाए जाने वाले सफेद चूहों को **काबा** कहा जाता है।
- यहाँ सफेद चूहे के दर्शन करण जी के दर्शन माने जाते हैं।
- राव जोधा के समय मेहरानगढ़ दुर्ग की नींव करणी माता ने रखी।
- करणी माता की गायों का ग्वाला-दशरथ मेघवाल था।
- राव कान्ह ने इनकी गायों पर हमला किया।
- महाराजा गंगासिंह ने इस मंदिर के लिए चांदी के किवाड़ भेंट किया।
- इनके बचपन का नाम रिद्धु बाई था।
- करणी माता का मंदिर को मठ कहलता है।
- अवतार - जगतमाता
- उपनाम – काबा वाली माता, चूहों की देवी।
- करणी जी की इष्ट देवी 'तेमड़ा माता' हैं। करणी जी के मंदिर के पास तेमड़ाराय देवी का भी मंदिर है।
- सफेदचील को करणी माता का रूप माना जाता है।
- करणी जी के मठ के पुजारी चारण जाति के होते हैं।
- चौत्र एवं आश्विन माहकी नवरात्रि में मेला भरता है।
- देशनोक बीकानेर में करणी माता के मंदिर की नींव स्वयं करणी माता ने रखी थी।
- करणी माता के इस मंदिर में दो कढ़ाई स्थित है, जिनके नाम - "**सावन-भादो कड़ाइयाँ**" हैं।

जीण माता -

- चौहान वंश की आराध्य देवी। ये धंधराय की पुत्री एवं हर्ष की बहन थी। मंदिर में इनकी अष्टभुजी प्रतिमा है। इनके इस मंदिर का निर्माण पृथ्वीराज चौहान प्रथम के समय राजा हट्टड़ द्वारा करवाया गया। जीणमाता की अष्टभुजा प्रतिमा एक बार में ढ़ाई प्याला मदिरा पान करती है। इन्हें प्रतिदिन ढाई प्याला शराब पिलाई जाती है।
- जीणमाता का मेला प्रतिवर्ष चैत्र और आश्विन माह के नवरात्रों में लगता है।
- जीणमाता तांत्रिक शक्तिपीठ है। इसकी अष्टभुजी प्रतिमा के सामने घी एवं तेल की दो अखण्ड ज्योति सदैव प्रज्वलित रहती हैं।
- जीणमाता का गीत राजस्थानी लोक साहित्य में सबसे लम्बा है।
- जीणमाता का अन्य नाम भ्रामरी देवी है।

कैला देवी -

- करौली के यदुवंश (यादववंश) की कुल देवी।
- इनकी आराधना में लागुरिया गीत गाये जाते हैं।
- कैला देवी का लक्खी मेला प्रतिवर्ष चैत्र मास की शुक्ला अष्टमी को भरता है। कैला देवी मंदिर के सामने बोहरा की छतरी है।

शिला देवी -

- जयपुर के कछवाहा वंश की आराध्यदेवी / कुलदेवी। इनका मंदिर आमेर दुर्ग में है।
- शिलामाता की यह मूर्ति पाल शैली में काले संगमरमर में निर्मित है। आमेर के महाराजा मानसिंह प्रथम द्वारा पूर्वी बंगाल के राजा केदार को पराजित कर **'जस्सोर'** नामक स्थान से अष्टभुजी भगवती की मूर्ति।6वीं शताब्दी में आमेर लाए थे। आमेर लाकर उन्होंने आमेर दुर्ग में स्थित जलेब चौक के दक्षिणी-पश्चिमी कोने में मंदिर बनवाया था।

इस देवी को नरबलि दी जाती थी तथा यहाँ भक्तों की मांग के अनुसार मन्दिर का चरणामृत दिया जाता है। मान्यता है कि इस देवी की जहाँ पूजा होती है उसे कोई नहीं जीत सका।

जमुवायमाता –

- ढूँढाड़ के कछवाहा राजवंश की कुलदेवी । इनका मंदिर जमुवा रामगढ़, जयपुर में है। इस मंदिर का निर्माण कछवाहा वंश के दुलहराय द्वारा मंदिर का निर्माण करवाया गया।

आईजी माता –

- सिरवी जाति के क्षत्रियों की कुलदेवी है । इनका मंदिर बिलाड़ा गाँव (जोधपुर) में है। इनके मंदिर को 'दरगाह' व थान को 'बड़ेर' कहा जाता है। ये रामदेवजी की शिष्या थी। इन्हें माजी देवी (नवदुर्गा) का अवतार माना जाता है।
- इनके मन्दिर में मूर्ति नहीं होती तथा जलने वाले दीपक की ज्योति से केसर टपकती रहती है । इनके मन्दिर का पूजारी दीवान कहलाताहै ।

राणी सती –

- वास्तविक नाम 'नारायणी'। 'दादीजी' के नाम से लोक प्रिय। झुंझुनू में हर वर्ष भाद्रपद अमावस्या को मेला भरता है ।
- इनके पति का नाम – तन धनदास

नोट-

- इन्होंने हिसार में मुस्लिम सैनिकों को मारकर अपने पति की मृत्यु का बदला लिया और स्वयं सती हो गयी ।
- अग्रवाल समाज की कुलदेवी।
- राज्य सरकार ने 1988 में इस मेले पर प्रतिबंध लगा दिया क्योंकि 1987 में देवराला (सीकर) में "रूपकंवर" नामक राजपूत महिला सती हो गयी थी।

आवड़ माता –

- जैसलमेर के भाटी राजवंश की कुलदेवी । इनका मंदिर तेमड़ी पर्वत (जैसलमेर) पर है।
- जैसलमेर के तेमड़ी पर्वत पर एक साथ सात कन्याओं को देवियों के रूप में पूजा जाता है ।

स्वांगिया जी माता-

- राज चिन्हों में सबसे ऊपर पालम चिड़िया, जिसे शकुल चिड़ी भी कहते है । यह देवी का प्रतीक है
  - सुगन चिड़ी को आवड़ माता का स्वरूप माना जाता है।

शीतला माता-

- इन्हें चेचक की देवी, सेढ़ल माता, बोदरी देवी, बच्चों की संरक्षिका आदि नामो से भी जाना जाता है ।
- जांटी (खेजड़ी) को शीतला मानकर पूजा की जाती है ।
- शीतला माता का मंदिर **चाकसू गांव (जयपुर) में शील की डूंगरी पर** स्थित है। तथा इस मंदिर का निर्माण महाराजा श्री माधोसिंह द्वितीय जी ने करवाया था।
- इस मंदिर में चेत्र कृष्णा अष्टमी (शीतलाष्टमी) को वार्षिक पूजा व विशाल मेला भरता है। इस दिन लोग बास्योड़ा मनाते हैं।
- इनकी पूजा खंडित प्रतिमा के रूप में की जाती है तथा पुजारी कुम्हार होते हैं।
- इनकी सवारी 'गधा' है।
- इसे सैंढल माता या महामाई भी कहा जाता है।
- शीतलाष्टमी को लोग बास्योड़ा (रात का बनाया ठण्डा भोजन) खाते हैं।
- शीतला माता एकमात्र देवी है जो खण्डित रूप में पूजी जाती है।

सुगाली माता –

- आऊवा (पाली) के ठाकुर कुशाल सिंह चंपावत की ईष्ट देवी हैं। इस देवी की प्रतिमा के दस सिर और चौपन हाथ हैं।
- इन्हें 1857 की क्रान्ति की देवी माना जाता है।
- सुगाली माता की मूर्ति वर्तमान में पाली के बागड़ संग्रहालय में रखी गई है, इससे पहले यह अजमेर के राजपूताना म्यूजियम में थी।

नकटी माता –

- जयपुर के निकट जयभवानी पुरा में 'नकटी माता' का प्रतिहार कालीन मंदिर है ।

ब्राह्मणी माता –

- बाराँ जिले के अंता कस्बे से 20 किमी. दूर सोरसन ग्राम के पास ब्राह्मणी माता का विशाल प्राचीन मंदिर है।
- विश्व में संभवतः यह अकेला मंदिर है जहाँ देवी की पीठ की ही पूजा होती है अग्र भाग की नहीं। यहाँ माघ शुक्ला सप्तमी को गधों का मेला भी लगता है।

नोट – प्रिय पाठकों ,यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए नीचे दिए गये **हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें** , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी **"RSMSSB LDC (लिपिक ग्रेड – II, कनिष्ठ सहायक)"** की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे, धन्यवाद /

संपर्क करें – 8233195718, 8504091672, 9694804063, 9887809083

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से अन्य परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम –

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्न
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 (cut off- 64)
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)
SSC GD 2021	30 नवम्बर	66 (100 में से)
SSC GD 2021	01 दिसम्बर	65 (100 में से)
SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
राजस्थान S.I. 2021	13 सितम्बर	113 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	79 (150 में से)

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	103 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	95 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (1st शिफ्ट)	56 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 (160 में से)

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

& Many More Exams

दोस्तों, इनका proof देखने के लिए नीचे दी गयी लिंक पर क्लिक करें या हमारे youtube चैनल पर देखें –

RAS PRE. – https://www.youtube.com/watch?v=p3_i-3qfDy8&t=136s

VDO PRE. – https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856W18&t=202s

Patwari – https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=103s

अन्य परीक्षाओं में भी इसी तरह प्रश्न आये हैं Proof देखने के लिए हमारे youtube चैनल (Infusion Notes) पर इसकी वीडियो देखें या हमारे नंबरों पर कॉल करें।

संपर्क करें- 8233195718, 9694804063, 8504091672, 9887809083

ONLINE ORDER के लिए OFFICIAL WEBSITE	Website- https://bit.ly/rajasthan-ldc-notes
PHONE NUMBER	+918233195718 +918504091672 9694804063 01414045784,
TELEGRAM CHANNEL	https://t.me/infusion_notes
FACEBOOK PAGE	https://www.facebook.com/infusion.notes
WHATSAPP करें	https://wa.link/kxkr5q

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

अध्याय – 5

राजस्थान के प्रमुख मंदिर

किराडू के मंदिर :

- बाड़मेर के हाथमा गांव के निकट एक पहाड़ी के नीचे **किराड़** में भगवान विष्णु व शिव मंदिर स्थित हैं।
- किराडू का पुराना नाम किरात कूप है जो परमार राजाओं की राजधानी थी।
- मुख्य मंदिर : सोमेश्वर
- किराडू के मंदिरों को राजस्थान का खजुराहों कहते हैं। किराडू की स्थापत्य कला नागर शैली की है।

सूर्य मंदिर :

- झालरापाटन (झालावाड़) के समीप ।
- इसे सात सहेलियों का मंदिर कहते हैं ।
- कर्नल जेम्स टॉड ने इसे चारभुजा मंदिर भी कहा है ।
- इसे पद्मनाभ मंदिर भी कहते हैं ।
- यह मंदिर 10वीं शताब्दी में निर्मित हुआ।

अर्थुना के मंदिर :

- बांसवाड़ा
- अर्थुना भी परमारों की राजधानी थी।
- मुख्य मंदिर : हनुमान जी का मंदिर।
- 11वीं एवं 12वीं शताब्दी के बने हुए हैं।
- इन्हें 'वागड़ का खजुराहों' कहते हैं ।

रणकपुर के जैन मंदिर :

- **पाली**
- कुम्भा के समय रणकशाह द्वारा निर्मित।
- मुख्य मंदिर : चौमुखा मंदिर (वास्तुकार : देपाक)
- इस मंदिर में 1444 खम्भे हैं अतः इसे खम्भों का अजायबघर कहते हैं।
- इस मंदिर के पास ही नेमिनाथ मंदिर है, जिसे वेश्याओं का मंदिर भी कहते हैं।

देलवाड़ा के जैन मंदिर :

- **सिरोही**
- विमल वासाही मंदिर : इसका निर्माण 1031 ई. में भीमशाह (गुजरात के चालुक्य राजा का मंत्री) ने करवाया था।
- नेमीनाथ मंदिर : चालुक्य राजा धवल के मंत्री तेजपाल एवं वास्तुपाल ने इसका निर्माण करवाया था। इसे देवरानी जेठानी का मंदिर भी कहते हैं ।

पुष्कर के मंदिर :

- यहाँ ब्रह्मा जी का मंदिर बना हुआ है जिसका निर्माण गोकुलचंद पारीक ने करवाया।
- यहाँ कार्तिक पूर्णिमा को मेला भरता है।
- यहाँ सावित्री माता का मंदिर भी है।
- यहाँ रंगनाथ मंदिर भी बना हुआ है जो द्रविड़ शैली का पुष्कर को कोंकण तीर्थ भी कहा जाता है।
- ब्रह्मा जी के अन्य मंदिर : आसोतरा (बाड़मेर), छींछ (बांसवाड़ा)

एकलिंगनाथजी के मंदिर :

- कैलाशपुरी (उदयपुर) नागदा के समीप।
- 18वीं सदी में बप्पा रावल ने इसका निर्माण करवाया था।

सहस्त्रबाहु का मंदिर :

- नागदा (उदयपुर)
- इसे सास-बहु का मंदिर भी कहते हैं ।
- **नौ ग्रहों का मंदिर** : किशनगढ़ (अजमेर)
- **सांवलिया जी का मंदिर** : मंडफिया (चितौड़गढ़), इसे चोरों का मंदिर भी कहते हैं ।

कपिल मुनि का मंदिर :

- कोलायत (बीकानेर), कार्तिक पूर्णिमा को मेला भरता है।
- कपिल मुनि सांख्य दर्शन के प्रणेता थे।

अम्बिका माता का मंदिर :

- जगत (उदयपुर)
- इसे मेवाड़ का खजुराहों कहते हैं ।
- इसे राजस्थान का मिनी खजुराहों कहते हैं ।

कंसुआ मंदिर :

- कोटा, मौर्य राजा धवल ने शिव मंदिर बनवाया था, जिसमें 1000 शिवलिंग हैं ।
- यहाँ गुप्तेश्वर महादेव का मंदिर भी है, जिसके दर्शन नहीं किये जाते हैं ।

अध्याय – 10

राजस्थानी की वेशभूषा एवं आभूषण

राजस्थान में पुरुष वस्त्र (वेशभूषा)

पगड़ी- इसको पाग, पेचा, फालियो, साफा, घुमालो, फेटो, सेलो, अमलो, लपेटो, बागा, शिरोत्राण, फेंटा आदि नामो से भी जाना जाता हैं। यह सिर पर लपेटे जाना वाला लगभग 5.5 मीटर लम्बी एवं 40 सेमी. चौंड़ी होती हैं। उदयपुर की पगड़ी तथा जोधपुर का साफा प्रसिद्ध हैं। युद्ध भूमि में केसरिया पगड़ी, दशहरे पर काले रंग की मंदील पगड़ी, होली पर फूल-पत्तियों वाली पगड़ी, विवाह पर पंचरंगी पगड़ी, श्रावण में लहरिया पगड़ी पहनी जाती हैं। रक्षाबंधन के अवसर पर बहिन भाई को मोठड़ा साफा देती हैं। मीणा एवं गुर्जर जाति की पगड़ी को फेटा कहते हैं।

धोती- पुरुष द्वारा कमर से घुटने तक पहना जाने वाला वस्त्र हैं। आदिवासियों/भीलों द्वारा पहनी जाने वाली धोती ढ़ेपाड़ा/डेपाड़ा कहलाती हैं। सहरिया जनजाति के लोग धोती को पंछा कहते हैं।

अंगरखी/बुगतरी - पूरी बाहों का बिना कॉलर एवं बटन वाला कुर्ता जिसे बांधने के लिए कसें (डसें) होती हैं। यह प्रायः सफेद रंग का होता हैं जिस पर कढ़ाई की होती हैं।

पोतिया - भील पुरुषों द्वारा पगड़ी के स्थान पर बांधा जाने वाला वस्त्र पोतिया कहलाता हैं।

शेरवानी- शादियों में पुरुषों द्वारा पहने जाने वाला वस्त्र जो घुटने से लम्बा एवं कोटनुमा होता हैं।

पायजामा - अंगरखी, चुगा और जामें के नीचे कमर व पैरों में पहना जाने वाला वस्त्र पायजामा कहलाता हैं।

टोपी- यह पगड़ी की जगह सिर को ढकने का वस्त्र होता हैं।

कमीज- ग्रामीण क्षेत्र में पुरुषों द्वारा धोती (कमर) के ऊपर पहने जाने वाला वस्त्र।

चुगा - इसे चोगा भी कहते हैं। यह अंगरखी के ऊपर पहना जाने वाला वस्त्र होता हैं।

आतमसुख - तेज सर्दी से बचने के लिए शरीर पर ऊपर से नीचे तक पहने जाने वाला वस्त्र।

बिरजस (ब्रिजेस) - यह पायजामे के स्थान पर पहना जाने वाला चूड़ीदार वस्त्र होता हैं।

कमरबंध- इसे पटका भी कहते हैं। यह जामा के ऊपर कमर पर बाँधा जाने वाला वस्त्र होता हैं, जिसे तलवार या कटार को फंसाया जाता हैं।

पछेवड़ा - तेज सर्दी में ठण्ड से बचाव के लिए पुरुषों द्वारा कम्बल की तरह ओढ़े जाने वाला मोटा सूती वस्त्र पछेवड़ा कहलाता हैं।

अंगोछा - धूप से बचने के लिए पुरुषों द्वारा सिर पर बाँधा जाने वाला वस्त्र अंगोछा कहलाता हैं।

राजस्थान में महिलाओं (स्त्रियों) के वस्त्र / वेशभूषा

कुर्ती और कांचली – स्त्रियों द्वारा शरीर के ऊपरी हिस्से (कमर के ऊपर) पहनी जाती हैं। कांचली के ऊपर कुर्ती पहनी जाती हैं, जिसमें कांचली के बांहें होती हैं जबकि कुर्ती के बांहें नहीं होती हैं।

घाघरा - इसे लहंगा, पेटीकोट, घाबला आदि नामो से भी जाना जाता हैं। यह कमर से नीचे एड़ी तक पहना जाने वाला घेरदार वस्त्र होता हैं, जो कलियों को जोड़कर बनाया जाता हैं। आदिवासियों के घाघरे को कछाबू कहते हैं। आदिवासियों के नीले रंग के घाघरे को नांदना कहते हैं। रेशमी घाघरा जयपुर का प्रसिद्ध हैं।

ओढ़नी (लुंगड़ी) - महिलाओं द्वारा यह सिर पर ओढ़ी जाती हैं। लहरिया, पोमचा, धनक, चुंदरी, मोठड़ा आदि लोकप्रिय ओढ़नियां हैं। डूंगरशाही ओढ़नी जोधपुर की प्रसिद्ध हैं। ताराभांत की ओढ़नी आदिवासी महिलाओं द्वारा ओढ़ी जाती हैं।

लहरिया - यह श्रावण मास की तीज को पहने जाने वाली अनेक रंगों की ओढ़नी हैं। समुंद्री लहर नामक लहरिया जयपुर में रंगा जाता हैं।

मोठड़ा- जब लहरिया की धारियां एक-दूसरे को काटती हुई बनाई जाती हैं, तो वह मोठड़ा कहलाती हैं। मोठड़ा जोधपुर की प्रसिद्ध हैं।

सलवार- कमर से लेकर पांवों में पहना जाने वाला वस्त्र सलवार कहलाता हैं।

कुर्ता- यह शरीर के ऊपरी हिस्से पर पायजामा के ऊपर पहना जाने वाला वस्त्र होता हैं।

कटकी- अविवाहित व आदिवासी युवतियां द्वारा ओढ़ी जाने वाली ओढ़नी कटकी कहलाती है।

आदिवासी महिलाओं के वस्त्र

- तारा भांत की ओढ़नी
- केरी भांत की ओढ़नी
- सावली भांत की ओढ़नी
- लहर भांत की ओढ़नी
- ज्वार भेंट की ओढ़नी
- लूगड़ा
- रैजा - सहरिया स्त्री का विवाह वस्त्र
- चूनड़ - यह एक ओढ़नी होती है, इसमें बिंदियों का सयोंजन होता है।
- नौंदना - यह आदिवासी महिलाओं द्वारा पहना जाने वाला वस्त्र होता है।
- रेनसाई - लहंगे की छींट जिसमें काले रंग पर लाल एवं भूरे रंग की बूटियां होती है।
- जाम साई साड़ी - यह विवाह के समय पहना जाने वाला वस्त्र होता है, इसमें लाल जमीन पर फूल-पत्तियां होती हैं।

राजस्थान में आभूषण

राजस्थान में स्त्रियों के प्रमुख आभूषण

सिर के आभूषण-
शीशफूल, (सिरफूल या सिरेज), टिका, सिरमांग, रखड़ी (घुंडी) या बोर (बोरला), गोफण, पतरी, टिकड़ा, मेमंद, फूलगुघर, मैंण काचर, खींच, मोदियो आदि ।

ललाट (मस्तक) के आभूषण –
बिन्दी, टीका, टीडीभलको, तिलक, सांकली, दामिनी, ताबित, झेला, बोरला, सिवतिलक आदि ।

नाक के आभूषण –
चूनी, चोंप, नथ, लटकन, लूंग, कांटा, फीणी, बाली, बुलाक, बेसरि, बजट्टी, भंवरिया, वारी, खीवण,।

कान –
जमेला, झुमका, झेला, बाली, टोटी/बजूली, कर्णफूल, सुरलियाँ, पीपलपत्रा, पाटीसूलिया, अंगोटिया, ऐरंगपता, कोकरू, खींटली, गुड़दों, छैलकड़ी, झूंटणों, बाळा, माकड़ी, मच्छी ।

दांत –
चूंप, रखन।

गला –
कंठी, कंठसरी, खुंगाली (हंसली), गलपटिया, आड, चन्द्रहार, चम्पाकली, ठुसी, तुलसी, तिमणिया, मूंठ, मांदलिया, मोहनमाल, मंगलसूत्र, निम्बोरी, बजण्डी, हार, हालरो, झालरो, खिंवली, गळपटियों, छैंड़ियो, तगतगई, तांतणियों, तैंड़ियो, थाळों, बठळ आदि ।

बाजू –
अणत, कड़ा, कातरिया, पट, तकमा, टड्डा, नवरत्न, अनन्त, बाजूबन्द, भुजबन्द, हारपन, अड़कणी, खांच, बहरखौं आदि ।

कलाई –
कंगन, कंकण, कांकणी कंगन, गोखरू, चूड़ियां, हतपान (हथफूल), नोगरी, पुणच/पौंची, गजरो, छैलकड़ो, पटला, पूंचिया आदि ।

अंगुलियां –
अंगूठी, अरसी, दामणा, बींटी, मुरसी, छल्ला आदि ।

अंगुठा –
अंगुथळो,

कमर –
कणकती, कन्दोरो, करधनी, तगड़ी, सटको, कड़तोड़ौं, कणगावलि, मुखळा।

पैर –
आंवला, कड़ला, घुंघरू, झांझर, टणका, हनका, तोड़ी, लच्छा, लंगर, पायल (कंकणा / पींजणी / पेजणिया / रमझोळ / शकुन्तला), पायजेब, नेवटी, नूपूर, नंकुम, हीराजामी, अणोटपोल, तेधड़, पादसंकळिका, रोळ, टोडरौं।

विशेष-पुरूषों के पांव में स्वर्णाभूषण टोडर पहना जाता हैं।

पैर की अंगुली –बिछिया, पगपान, गौंर, फोलरी, लछने, गूठलो, दौंळीकियौं, नखलियौं, गुठलो आदि ।

राजस्थान में पुरूषों के आभूषण

सिर –
कलंगी, सिरपेच, सेहरा, मुकुट।

कान –

नोट – प्रिय पाठकों ,यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए नीचे दिए गये **हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें** , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी **"RSMSSB LDC (लिपिक ग्रेड – II, कनिष्ठ सहायक)"** की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे, धन्यवाद /

संपर्क करें – 8233195718, 8504091672, 9694804063, 9887809083

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से अन्य परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम –

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्न
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 (cut off- 64)
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)
SSC GD 2021	30 नवम्बर	66 (100 में से)
SSC GD 2021	01 दिसम्बर	65 (100 में से)
SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
राजस्थान S.I. 2021	13 सितम्बर	113 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	79 (150 में से)

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	103 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	95 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (1st शिफ्ट)	56 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 (160 में से)

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

& Many More Exams

दोस्तों, इनका proof देखने के लिए नीचे दी गयी लिंक पर क्लिक करें या हमारे youtube चैनल पर देखें –

RAS PRE. – https://www.youtube.com/watch?v=p3_i-3qfDy8&t=136s

VDO PRE. – https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856W18&t=202s

Patwari – https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=103s

अन्य परीक्षाओं में भी इसी तरह प्रश्न आये हैं Proof देखने के लिए हमारे youtube चैनल (Infusion Notes) पर इसकी वीडियो देखें या हमारे नंबरों पर कॉल करें।

संपर्क करें- 8233195718, 9694804063, 8504091672, 9887809083

ONLINE ORDER के लिए OFFICIAL WEBSITE	Website- https://bit.ly/rajasthan-ldc-notes
PHONE NUMBER	+918233195718 +918504091672 9694804063 01414045784,
TELEGRAM CHANNEL	https://t.me/infusion_notes
FACEBOOK PAGE	https://www.facebook.com/infusion.notes
WHATSAPP करें	https://wa.link/kxkr5q

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO